Vol 6 Issue 12 Sept 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

बड़वानी जिले में कपास उत्पादन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. विजय ग्रेवाल[1] , रेखा पंवार[2]
[1]सहायक प्राध्यापक , श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय
[2]शोधार्थी – वाणिज्य , देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ,इन्दौर (म.प्र.)

प्रस्तावना :–

भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। क्योकि कृषि केवल जीविका उपार्जन का साधन नही है, वरन् अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। दुनिया में भारत कपास का उत्पादन करने वाला बडा देष है। प्रथम पर सयुंक्त राज्य अमेरिका व द्वितीय स्थान पर चीन है। भारत मे सबसे ज्यादा कपास का उत्पादन गुजरात में किया जाता है।

भारत में कपास की खेती का क्षेत्र बिखरा हुआ है इन दोनो में विभिन्न प्रकार की जलवायु मिट्टी और उत्पादन की दशाए पायी जाती हैं। अतः प्रत्येक क्षेत्र की कपास अन्य क्षेत्र से भिन्न होती है। और उस क्षेत्र की अवस्थाओ के अनुरूप होती हैं कपास के उत्पादन की दृष्टि से दक्षिण की काली मिट्टी का प्रदेश बड़ा महत्वपुर्ण है, गुजरात कर्नाटक, पंजाब, आन्ध्रप्रदेश, तलिमनाडु, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश मिलकर देश के उत्पादन केवन तीन राज्यो गुजरात, महाराष्ट्र, और आन्ध्रप्रदेश मे होता है अन्य मुख्य उत्पादक राज्य उत्तरप्रदेश और हरियाणा है।

गत वर्षो मे देश मे कपास उत्पादन में उल्लेखनीय रूप से मात्रात्मक वृद्धि प्राप्त की है। देश मे वर्ष 1970 तक 8.00 से 9.00 लाख गाठो की सीमा में प्रति बड़ी मात्रा मे आयात होता था तथापि सरकार द्वारा कृषि पंचवर्षीय योजनाओ द्वारा गहन कपास उत्पादन कार्यक्रमो जैसी विशेष योजनाओ को आरंभ करने के बाद कपास उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि से तथा 70 के दशक के मध्य में हायब्रिड किस्मों की बुआई के कपास उत्पादन को आवश्यक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है तब से देश कपास उत्पादन में आत्मनिर्भर बन गया है। यह 90 के दशक के अंत में और 20 के दशक के आंरम्भ के कुछ वर्षो को छोडकर जब कम उपज के कारण और देशी वस्त्रोद्योग की बढ़ती कपास आवश्यकता के कारण कपास का आयात बड़ी मात्रा में हुआ।

म.प्र. में कपास का उत्पादनः– मालवा के पठार एवं नर्मदा और ताप्ती की घाटियो मे काली और कछारी मिट्टीयो में इसका उत्पादन किया जाता है। पश्चिम व पुर्वी, निमाड, रतलाम, मन्दसौर मे बोयी जाती हैं। मध्यप्रदेश में प्रतिवर्ष लगभग 12 लाख गॉठ कपास का उत्पादन किया जाता है।

६ बड़वानी जिले मे कपास का उत्पादनः–निमाड क्षेत्र मे 19 वी शताब्दी मे महाली और बनी कपास उत्पादन किया जाता था जो चंदेल महैश्वर और निमाड के क्षेत्रो मे उपयोग मे आता है। मुख्य तोर पर इस क्षेत्र मे आरबोरियन नस्ल का कपास उत्पन्न किया जाता था सन् 1942 मे इस क्षेत्र में सर्वप्रथम जार्जियन अपलेड किस्म बोई गई और 1912 मे मालवा एवं निमाड क्षेत्र मे कम्बोडिया कपास की खेती सुरी की गई इस क्षेत्र मे कपास की खेती में सुधार का कार्य इन्दौर मै 1924 में शुरू हुआ ओर समय–समय पर उसका पुनर्वालोकण किया गया। स्थानीय जातियो मे मालवी कपास का विकास किया जो उत्पत्ति जिनिंग एवं किस्म की दृष्टि से श्रेष्ट पाया गया। 1935 मे यह किस्म मालवी –9 के नाम से सामान्य कृषि के लिये वितरित की गई। विगत तीन वर्षो मे बड़वानी जिले मे भी बी. टी. कॉटन के उत्पादन का रूकबा सिंचित क्षेत्र मे तेजी से बढ़ा है। निमाड मे 60 प्रतिशत खेती सिचाई से की जाती हैं। कपास को मक्का, मूँग, सोयाबीन के साथ लगाया जाता है। अक्सर दक्षिण पश्चिम मानसून शूरू होने पर जुन के मध्य में कपास को बोने का काम शुरू किया जाता है। और जुलाई के मध्य तक यह कार्य पुरा कर लिया जाता है। कपास की खेती के लिये जाते है जब कपास का पोधा 6 इंच से 8 इंच का हो जाता है। तो खुरपा की सहायता से मानवीय श्रम द्वारा निदाई की जाती है। यह काम 2 या 3 बार किया जाता है। कपास को चुनने का कार्य नवम्बर मध्य मे शुरू होता है। और फरवरी के मध्य तक जारी रहता है। म.प्र. अन्य जिलो की तुलना में बड़वानी जिला मे कपास का उत्पादन संतोषप्रद है। क्योकि खण्डवा जिले मे कपास की कई अच्छी किस्म उत्पन्न की जाने लगी हैं। जिसका लाभ बड़वानी को भी मिलने लगा है। विक्रम खण्डवा–2, जे.के.एच.–1 एवं एच 6 का उत्पादन तो था ही इसके बाद जिले मे 2001 में कपास की दो उन्नत प्रजातियो जवाहरलाल नहेरू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कृषि महाविद्यालय खण्डवा द्वारा परिचित करायी गयी है। जिनका नाम जवाहर, ताप्ती, एवं संकर किस्म की नई प्रजाति जेके एच–2 है। जावहर ताप्ती कपास असिंचित वर्षा आधारित हल्की माध्यम भूमि के लिये उपयुक्त है और जल्दी होने वाली किस्म है। इसका उम्पादन 15 क्विन्टल प्रति एकड तक है। जे.के. एच–2 संकर किस्म सिंचित व असिंचित खेती के लिय मध्यम व भारी भूमि के लिए उपयुक्त है। इसकी उत्पादकता 20 से 25 क्विटल प्रति एकड है।

जिले मे 5 वर्षो का कपास उत्पादन व उत्पादन क्षेत्र की स्थिति।

क्र.	वर्ष	क्षेत्र (हैक्टेयर	उत्पादन (170 ग्राम गठान)	उत्पादन में वृद्धि प्रतिशत
1	2007—8	51220	53252	—
2	2008—9	53460	54616	2.56
3	2009—10	50553	56059	2.64
4	2010—11	53253	58807	4.90
5	2011—12	53220	58910	0.17

स्त्रोत :— कार्यालय कृषि उपसंचालक बड़वानी

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2007 से 2012 तक कपास उत्पादन में वृद्धि हुई है। जिससे अगले आने वाले वर्षो में वृद्धि की सम्भावना है।

जिले मे 5 वर्षो का कपास उत्पादन व उत्पादन क्षेत्र की स्थिति।

क्र.	वर्ष	क्षेत्र (हैक्टेयर	उत्पादन (170 ग्राम गठान)	उत्पादकता का वृद्धि प्रतिशत
1	2007—8	51220	53252	—
2	2008—9	53460	54616	4.01
3	2009—10	50553	56059	4.63
4	2010—11	53253	58807	11.88
5	2011—12	53220	58910	15.74

स्त्रोत :— कार्यालय कृषि उपसंचालक बड़वानी

वर्ष 2007 से वर्ष 2012 तक कपास उत्पादकता में वृद्धि हुई है। जिससे बड़वानी जिले में कपास उत्पादन के प्रतिशत में भी वृद्धि हुई है।

कपास की उन्नत उत्पादन तकनीक :—

1. कपास रेशो वाली फसल है यह कपड़े तैयार करने का नैसगिक रेशा है।
2. म.प्र. मे कपास सिंचित एवं अंसिचित दोनो प्रकार के क्षेत्र मे लगाया जाता है।
3. प्रदेश मे कपास की फसल का क्षेत्र 7.06 लाख हेक्टेयर था तथा उपज 436.2 कि.ग्रा. लिट है।
4. बीटा कपास मे अधिकतम उपज दिसम्बर मध्य तक ले ली जाती है।
5. बी. टी. कपास मे रस चूसक के नियन्त्रण के लिय 2—3 छिडकाव कर ना पर्याप्त होता है। जबकी पहले देश की कुल कीटनाशक खपत का लगभग आधा भाग लग जाता था।
6. म.प्र. के कपास क्षेत्र का लगभग 75 प्रतिशत निमाड़ अंचल मे आता है इसके अतिरिक्त, धार, झाबुआ, देवास, छिन्दवाडा, जिले में कपास की फसल ली जाती है। मध्यम मे भारी बलुई दोमट एवं गहरी काली भूमि जिसमे पर्याप्त जीवांश हो व पानी निकास की व्यवस्था हो कपास के लिए अच्छी होती है।

जातियाँ :—आजकल अधिकतर किसान बीटी कपास लगा रहा है जी. ई.सी. द्धारा लगभग 250 बी.टी. जातियाँ अनुमोदित है। हमारे प्रदेश मे प्रायः जातियाँ लगाई जा रही है। बी.टी. कपास मे बी.जी—2 दो प्रकार की जातियाँ आती है। बिजी—1 जातियो मे तीन प्रकार के डेन्डू छेदक इल्लियॉए चिलकबरी इल्ली।

संकर किस्म उपयुक्त क्षेत्र जिले विशेष

डी.सी.एच.32 (1983) धार, झाबुआ, बडवानी, खरगोन महीन रेशे की किस्म

बुवाई का समय एवं विधि :—यदि पर्याप्त सिंचाई सुविधा उपलब्ध है तो फसल को मई मे ही लगाया जा सकता है। सिंचाई की पर्याप्त उपलब्धता न होने पर मानसून की उपयुक्त वर्षा होते ही कपास की फसल लगावे कपास की फसल की मिट्टी अच्छी भूरभूरी तैयार कर लगाना चाहिए। सामान्य उन्नत जातियो का 2.5 से 3.0 कि.ग्रा. बिज तथा संकर एवं बीटी जातियो का 1.0 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर की बुआई के लिए उपयुक्त होता है। उन्नत जातियो मे चैकुली 45—60, सेमी. पर लगाई जाती है। भारी भूमि मे 60— 60 के मध्य भूमि मे 60—45 एवं हल्की भूमि संकर जातियो में कतार से कतार एवं पौधे से पौधे बीज की दुरी क्रमश 90 से 120 सेमी. एवं 60 से 90 सेमी. रखी जाती है।

खाद एवं उर्वरक :—

प्रजाति	मत्रजन किलोग्रम हैक्टेयर	फास्फोरस CKGIM	पोटाश (KGH	गंधक (KGH)
उन्नत	80 — 120	40 — 60	20—30	25
संकर	150	75	40	25
	बुआई के समय एवं चौथाई 30 दिन, 90 दिन पर बाकी 120 दिन पर आधा बुआई के समय एवं बाकी 60 दिन पर	आधा बुआई के समय एवं बाकी 60 दिन पर	आधा बुआई के समय एवं बाकी 60 दिन पर	बुआई के समसय

- उपलब्ध होने पर अच्छी तरह से पकी हुई गोबर की खाद कम्पोस्टर 7 से 10 टन (20 से 25 गाडी) अवश्य देना चाहिए।
- बुआई के समय एक हैक्टेयर के लिए लगने वाले बीज को 500 ग्राम पी.एस. बी. उपचारीत कर सकते है। जिससे 20 कि.ग्रा. नत्रजन 10 कि.ग्रा. स्फुर की बचत होगी।
- बोनी के बाद उर्वरक को कालम पद्धति से देना चाहिए इस पद्धति से पोधे के होरे परिधि पर 15 गहरे गड़डे सब्बल बनाके डालते है। व मिट्‌टी से बंद कर देते हैं

कपास के रोग के लक्षण एवं पृबन्धन :—

कपास के रोग	रोग के लक्षण
कपास का कोणीय धब्बा एवं जीवाणु झुलसा रोग	रोग के लक्षण पोधे के वायुवीय भागो पर छोटे गोले जलसक्ति बाद मे भूरे रंग के हो जाते है। रोग के लक्षण घेटो पर भी दिखाई देते है। घिटो एवं सहपत्रो पर भी भुरे काले चित्ते दिखाई देते है। यं घेटियॉ समय से पहले खुल जाती है। रोग ग्रस्त घेटो का रेषा खराब हो जाता हैं। इसका बीज भी सिकुड जाता है।
मायरोथीसियम पत्तीधब्बा रोग	इस रोग मे पत्तियो पर हल्के भूरे से गहरे रंग के धब्बे बन जाता है। कुछ समय बाद ये धब्बे आपस मे मिलकर अनियमित रूप से पत्तियो का अधिकांश भाग ढाक लेते है। धब्बो के बीच का भाग टुटकर नीचे गीर जाता है। इस रोग के फसल की उपज मे लगभग 20—25 प्रतिशत कमी आकी गई है।
अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग	इस रोग मे पत्तियो पर हल्के भूरे रंग के संकेद्रित धब्बे बनते है। व अन्त मे पत्तियॉ सुखकर झडने लगती है। वातावरण मे नमी की अधिकता होने पर ही यह रोग दिखाई देता है एवं उग्र रूप से फेलता है।
पोधे अंगमारी रोग	पोधें अंगमारी रोग मे बीजांकुरो के बीजपत्रो पर लाल भूरे रंग के सिकुडे हुए धब्बे दिखाई देते है। एंव स्तम्भ मूल संधि क्षेत्र लाल भूरे रंग का हो जाता हैं। रोग ग्रस्त पोधो की मूसला जडो को छोडकर मूलतन्तु सड़ जाते है। खेत मे उतिच नमी रहते हुए भी पौधो का मुरझाकर सुखना इस बीमारी का मुख्य लक्षण है।

प्रबंधन :—1. बोने से पुर्व बीजो को बावेस्टीन कवकनाशी दवा की 1 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से बीजापचार करे।
1.कोणीय धब्बा रोग के नियन्त्रण के लिए बीज को बोने से पहले स्टेप्टोसाइक्लिन (1 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में) बीजोपचार करे।
2.खेत मे कोणीय धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देते ही स्टेप्टोसाइक्लिन का 100 पी.पी.एम (1 ग्राम दवा प्रति 10 लीटर पानी मे) घोल का छिडकाव 15 दिन के अंतर पर दो बार करे।
3.जल निकास का उचित प्रबंध करें

कपास की चुनाई के समय रखने वाली सावधानीयॉः—

1. कपास की चुनाई प्रायः ओस सुखने के बाद ही करनी चाहिए।
2. अविकसित अधखिले या गाले छोटे की चुनाई नही करनी चाहिए।
3. चुनाई करते समय कपास के साथ सूखी पत्तीयो, डन्ठल, मिट्टी इत्यदि नही आनी चाहिए।
4. चुनाई पश्चात कपास को धूप मे सुखा लेना चाहिए क्योकि अधिक नमी से कपास मे रूई तथा बीज दोनो की गुणवत्ता मे कमी आती है। कपास को सुखाकर ही भंडारीत करे क्योकि नमी होने पर ही कपास पीला पड जायेगा। व फफुंद भी लग सकती है।

संदर्भ सूची :—

1. कृषक जगत।
2. नई दुनिया।
3. कपास सलाहकार मंडल।
4. भारतीय कपास निगम लिमिटेड।
5. भारत ज्ञान शब्दाकोष।
6. म. प्र. कृषि।
7. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, बड़वानी।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/